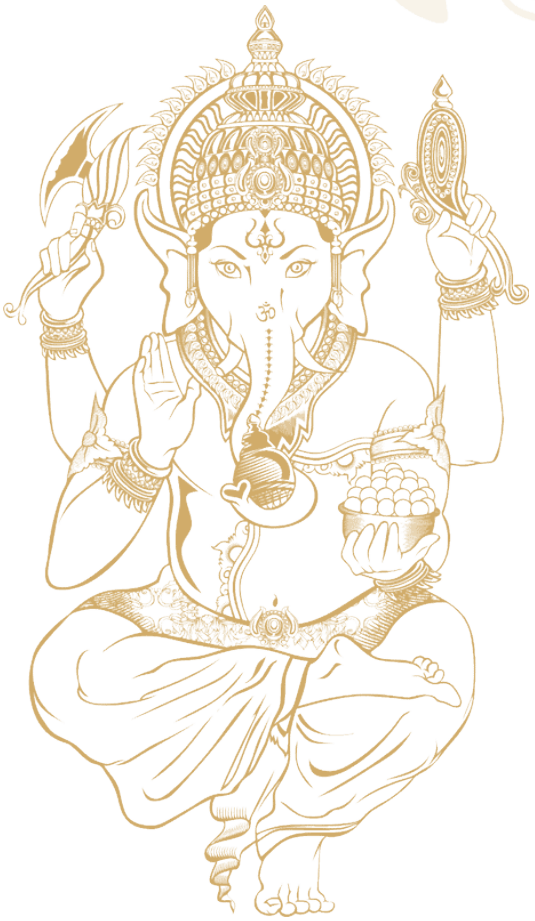

Lalit

Bhagyashree

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121095306

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
16-17/01/1997	जन्म तिथि	25-26/12/2000
गुरु-शुक्रवार	दिन	सोम-मंगलवार
घंटे 00:05:00	जन्म समय	04:02:00 घंटे
घटी 42:10:51	जन्म समय(घटी)	52:17:00 घटी
India	देश	India
Nasik	स्थान	Savda
20:00:00 उत्तर	अक्षांश	21:10:00 उत्तर
73:52:00 पूर्व	रेखांश	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:34:32	स्थानिक संस्कार	-00:26:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:12:39	सूर्योदय	07:01:05
18:16:08	सूर्यास्त	17:51:43
23:48:58	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:58

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 18वर्ष 4मा 3दि		23:52:18	कन्या	लग्न	तुला	29:42:21	केतु 0वर्ष 2मा 12दि	
चन्द्र		02:52:12	मक	सूर्य	धनु	10:35:18	सूर्य	
22/05/2021		14:26:17	मेष	चंद्र	धनु	12:56:56	09/03/2021	
22/05/2031		09:47:51	कन्या	मंगल	तुला	07:30:38	10/03/2027	
चन्द्र	22/03/2022	10:08:33	धनु	बुध	धनु	10:39:49	सूर्य	27/06/2021
मंगल	21/10/2022	05:02:24	मक	गुरु व	वृष	08:51:47	चन्द्र	27/12/2021
राहु	21/04/2024	14:22:43	धनु	शुक्र	मक	26:20:08	मंगल	03/05/2022
गुरु	21/08/2025	08:30:16	मीन	शनि व	वृष	01:00:57	राहु	28/03/2023
शनि	22/03/2027	07:22:44	कन्या व	राहु व	मिथु	21:35:56	गुरु	14/01/2024
बुध	21/08/2028	07:22:44	मीन व	केतु व	धनु	21:35:56	शनि	26/12/2024
केतु	22/03/2029	10:21:12	मक	हर्ष	मक	24:29:55	बुध	02/11/2025
शुक्र	21/11/2030	03:36:17	मक	नेप	मक	11:15:07	केतु	10/03/2026
सूर्य	22/05/2031	11:03:17	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	19:40:58	शुक्र	10/03/2027

लग्न-चलित

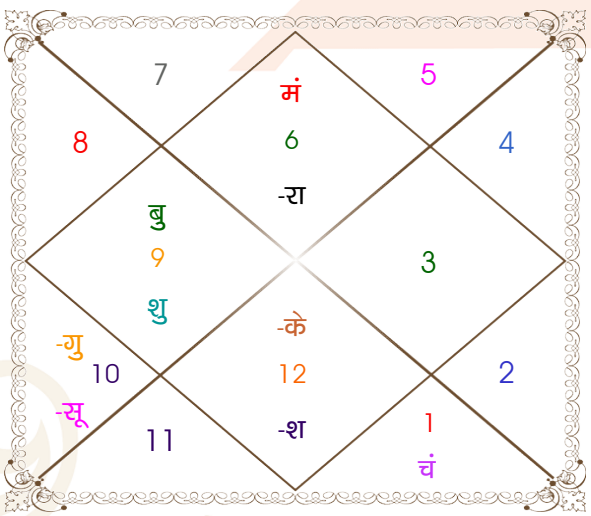

लग्न-चलित

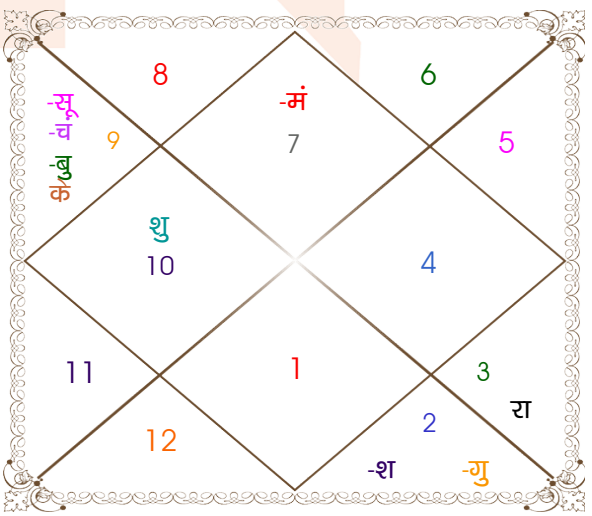

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गज	श्वान	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	मेष	धनु	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

संसपज का वर्ग मृग है तथा ठींहलौतमम का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार संसपज और ठींहलौतमम का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

संसपज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु संसपज कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ठींहलौतमम मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु संसपज कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है। संसपज तथा ठींहलींतमम में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।